

## संस्कृत साहित्ये प्रसङ्गे आन्तर्जालेर् गुरुरत्तु

**Yogmaya Roy**

Assistant Professor,

Ranaghat College,

Ranaghat, Nadia, India.

[yogmayaray@gmail.com](mailto:yogmayaray@gmail.com)

### Structured Abstract:

**सारसंक्षेपः** संस्कृत हलौ भारतीय सभ्यता, संस्कृति ओ ँतिह्येर धारण। वैदिक युग थेके श्रुति ह्ये ँसेछे गुरु शिष्य परम्पराय। उपनिषदेर गूढतत्त्व गुरुर निकट ग्रहण छाड़ा असम्भव छिलौ। सम्यकरूपे परिशीलित ँई भाषा परवर्ती सम्ये ँनेक विस्तार लाभ करेछे। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, स्मृतिशास्त्र, लौकिक साहित्य, महाकाव्य, रूपक, रामायण, महाभारत प्रभृति साहित्येर प्रभाव परवर्तीते विभिन्न साहित्ये, धर्मीय जीवने, समाज जीवने परिलक्षित ह्य। वर्तमाने ग्लोबलाइजेशनेर युगे मानवजातिर तार बुद्धिबले समस्त दुनियাকে करायत करेछे। ँर ँन्यतम माध्यम हलौ आन्तर्जाल। ँर माध्यमे ँधिकांश तथ्य ँमरा जानते पारि निजपरिसरे। वर्तमाने विभिन्न ग्रन्थसमूह, पत्र पत्रिका ँमरा आन्तर्जालेर माध्यमे सहजेई जानते पारि। दुष्प्राप्य पुस्तकओ देश विदेश थेके संग्रह करा यय ँति सहजेई। संस्कृत साहित्ये सम्पर्कित तथ्य तो वटेई - ँरौ ँनेक ँप्य पाओया यय। येमन-लघुसिद्धान्तकौमुदी, गणकाष्ठाध्यायी प्रभृति। धातुरूप, शब्दरूप, व्याकरण, शब्दकोष प्रभृतिर व्यवहारिक प्रयोजन आन्तर्जालेर माध्यमे सहजलभ्य ह्येछे। ँतँव संस्कृत साहित्ये प्रसङ्गे आन्तर्जाल ँत्यन्त परिपूरक।

**सांकेतिक शब्दः** आन्तर्जाल, संस्कृत, शास्त्र, प्रयुक्तिविद्या ।

**प्रणाली (Methodology):** गवेषणापत्राटि तुलनामूलक ँवंग वर्णनामूलकभावे लिखित ह्येछे। प्राचीन ँवंग वर्तमान धारणार उपर निर्भर करे विभिन्न ग्रन्थसमूह ओ इन्टारनेट ँर साहाय्ये बहू तथ्य संग्रह पूर्वक पुञ्जानुपुञ्ज पठनेर द्वारा रचित ह्येछे।

### प्रकल्प (Hypothesis):

- प्राचीन साहित्य ह्येव संस्कृत कतोटा अर्वाचीन
- तथ्यपूर्णेर् नजिरे इंटरनेटेर् साथे आदो प्रासङ्गिकता आहे किना
- एकटि भाषा बह्वर्ष धरे किभावे समृद्ध करे एसेछे समग्र जातिके समाजेर् दर्पण ह्ये
- संस्कृत साहित्य वर्तमाने दैनन्दिन जीवने ओ प्रयुक्तिविद्यार् क्षेत्रे प्रयोज्य किना

### भूमिका

एकविंश शताब्दीते समग्र मानुष प्रगतिशीलतार् हातछानिते प्रवहमान । विश्वके निजेर् अधीनस्त् करेछे। एई असम्भवेर् सम्भव सूचित ह्येछे आन्तर्जालेर् माध्यमे। आन्तर्जाल एखन साइबार विश्वेर् अक्लिजेन स्वरूप। अनुमान करा यार् ये, वर्तमाने आन्तर्जालेर् गति प्रति सेकेन्डे ७२ टेराबाइट। विपुल संख्यक तथ्येर् समावेश एखाने। अन्यान्य अनेक तथ्येर् पाशापाशि प्राचीन भारतीय साहित्यगुलिर् बहल संरक्षण आहे आन्तर्जाले। तवे एटि एकटि विस्मय एर् विषय ये, आन्तर्जाल तैरि ह्येयार् आगे एकमात्र भारतवर्ष येखाने साहित्येर् मध्ये आन्तर्जालेर् मतो समस्त रकम तथ्य पाओया येत। ए विषये संस्कृत साहित्येर् अग्रणी भूमिका अनस्वीकार्य।

### विषयवस्तु

संस्कृत साहित्य भारतीय संस्कृतिर् एकटा बाण्मय प्रकाश। ये पूर्णतार् मध्ये भारत सभ्यता समस्त खणुतार् सुषमा एवं समस्त विरोधेर् तार्ई परिचय बहन करे। माटिर् नीचे गाछेर् मूल बाईरे थेके देखते ना पेलेओ तार् अस्तिह्वके येमन अस्वीकार करा यार् ना, तेमनि आमार्देर् विभिन्न भाषार् उन्नेष ओ विकाशेर् क्षेत्रमूल संस्कृते निहित आहे। भारतभूमिते

एटि देवभाषारूपे परिचित। एटा अवश्यै बला येते पारे ये, समस्त रकमेर विद्यार (ज्ञान – विज्ञान) सूचक ; सत्य – शिव – सुन्दरेर अमोघ वार्ता पाई एखाने आमरा। तई शुधुमात्र ज्ञान नय, ज्ञानार्जनेर पथ प्रदर्शन करे एई भाषा। एमन कोनो विषय नेई ये एई साहित्ये व्यक्त हयनि। एर व्याप्ति बह्धा। वेद, पुराण, धर्मशास्त्र, स्मृतिशास्त्र, लौकिक साहित्य, महाकाव्य, रूपक, रामायण, महाभारत, आयुर्वेद, ज्योतिशास्त्र, गणितशास्त्र, दर्शनशास्त्र, व्याकरणशास्त्र, चिकित्साशास्त्र प्रभृति क्षेत्रे संस्कृत साहित्येर अबाध विचरण। वेद हलो भारतीय ईतिह्य संस्कृतिर आत्मा। एटि समस्त रकमेर ज्ञानेर संग्रहकम्क या सुस्वास्थ्य ओ चिन्तामुक्त जीवनेर सहायक। समग्र मानवजातिर सार्विक विकास ओ मूल्यबोधेर जन्ये वर्तमाने एर व्याख्या अतुलनीय। चतुर्वेद( ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) एवं उपवेद( आयुर्वेद, गन्धर्ववेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद) संस्कृत साहित्यके विश्वेर दरबारे सुप्रतिष्ठित करेछे। लौकिक साहित्येर विविध धारा आर विद्वक्क कविगणेर काव्य विपुल संख्यक तथ्येर समावेश घटाय। महाकवि वाल्मीकि, वेदव्यास अश्वघोष, भास, कालिदास, माघ, भारवि, भृहृरि, दण्डी, पाणिनि, भरत, विश्वनाथ, मम्मट, क्सेमेन्द्र, आनन्दवर्धन, जगन्नाथ, जयदेव एवं आधुनिक कविगण ताँदेर काव्ये ओ शास्त्र गुलि दैनन्दिन जीवने अन्यामात्रा बहन करे।

संस्कृत साहित्येर इतिहास पर्यालोचनाय प्राच्य ओ पाश्चात्य पण्डितगण विज्ञान ओ प्रयुक्तिर आलोचनाय यथायथ गुरुत्व देननि। ताँदेर मते साहित्य, दर्शन, शिल्प, धर्मशास्त्र प्रभृतिते प्राचीन भारतेर अवदान थाकलेओ विशुद्ध विज्ञान ओ प्रयुक्तिविद्याय अग्रगण्य नय – तादेर युक्ति हलो – भारतीय जीवनदर्शने अध्यात्तुचिन्तार अत्यधिक गौरव एवं ईहिक ओ व्यवहारिक जीवनेर प्रति अत्यधिक उँदार्यबोध वास्तवविमुख करेछिलो। किन्तु पुञ्जानुपुञ्ज विचार करले देखा यावे भारतीय विज्ञानमनस्कता, विज्ञानचेतना, विज्ञानेर विभिन्न धाराय प्राचीन आचार्यदेर अवदान

अपरिसीम । ए युगेर साथे प्राचीन भारतीय विज्ञान ओ प्रयुक्तिशास्त्रेर शाखागुलि उल्लेखयोग्य – आयुर्वेद वा चिकित्साशास्त्र (Medical Science), ज्योतिर्विद्या (Astronomy), फलित ज्योतिष (Astrology), गणितविद्या (Mathematics), किमियाविद्या (Alchemy), रसायनविद्या (Chemistry), धातुविद्या (Metallurgy), सुरापानविद्या (Distillation of Liquor), रत्नविद्या (Science of gems), प्राणिविद्या (Zoology), भूगोल (Geography), पक्षिविज्ञान (Ornithology), कृषिओ उद्भिदविद्या (Agriculture and Horticulture), युद्धविद्या ओ धनुरविद्या (Military and Archery), संगीतविद्या (Musicology : Vocal, Instrumental and Dance), शिल्प ओ स्थापत्यविद्या (Art and Architecture), मृगया ओ क्रीडाविद्या (Sports and Games), प्रयुक्तिविद्या (Technology), गन्ध ओ प्रसाधन (Cosmetic and Aromatic), पाकशास्त्र (Cookery) ।

नव जागरण उत्सुभूमि इउरोप थेके गणित ओ ज्योतिर्विद्यार सूत्रगुलि पाओयार जन्ये अनेकेइ ए देशके गणितेर आविष्कारक मने करलेओ आधुनिक गवेषणार द्वारा निश्चितभावेइ प्रमाण ह्येछे ये, भारत ओ ग्रीस थेकेइ गणितेर ज्ञान पेयेछिलेन सकले । ख्रिस्टपूर्व द्वितीय शतकेर आगे थेकेइ भारतीय गणित शून्यसूचक संख्यार व्यवहार करतेन । प्राचीन भारतीय ज्योतिर्विद्यार उन्नतिर कारणेइ गणितेर प्रयोजन ह्येछिल बले मने करा हय । ऋग्वेदेर समय थेकेइ दश एबं दशेर गुणितके विभिन्न संख्यार उल्लेख पाओया यय (ऋग्वेद संहिता – १/१५/४; १०, ८/१/९, ८/२/३२) । उनिश शतके येमन शिल्प विप्लवेर पर व्यवहारिक विज्ञान तथा प्रयुक्तिविद्यार अकल्पनीय उन्नति घटे तेमनइ प्राचीन ओ मध्ययुगे यज्ञविद्यार चर्चा हते । भोज प्रणीत ‘ समराज्जन सूत्रधार’ (ख्री. ११श शतक), ‘यज्ञशास्त्र’, ‘सूर्यसिधासुत’ प्रभृति ग्रन्थसमूहे यज्ञनिर्माणेर कला कौशल संक्षेपे वर्णित ह्येछे । संस्कृत पुराणगुलि भारतीय साहित्य-शिल्प –

संस्कृतिर आकरग्रह्। शिल्पशास्त्रेर विषय गुलो हलो - चित्रकला (Painting), मूर्तिशिल्प (Iconography), वास्तुविद्या (Civil Engineering), भास्कर्य (Sculpture) ओ स्थापत्य (Architecture)।

वास्तवसम्मतभावेइ बोळा यय ये, व्याकरण, भाषातत्त्व शब्दभाषुर, लिपि, प्रभृतिते संस्कृत दम्क माध्यम। एखन गबेष्णामूलक पठन पाठने विभिन्न भाषा ओ लिपि कम्पिउटारेर प्रोगामिं ए थाके। सेखाने देवनागरी लिपि सहजेइ युक्त हयेछे। वर्तमाने एटि विज्ञानसम्मत भाषारूपे समादृत। पूर्वे संस्कृत गुरुगृहे गुरु-शिष्य परम्पराय अध्ययन हतो। एक कथाय एटि गुरुमुखी विद्या छिलो। किन्तु वर्तमाने कम्पिउटार आर आन्तर्यालेर दौलते सार्वजनीन हये उठेछे। आधुनिक शिक्षा व्यवस्थाय कम्पिउटारेर मतो प्रयुक्तिर प्रयोग करे संस्कृत व्याकरण, वास्तुविद्या प्रभृति विषय साधारण श्रेणिकक्षे किंवा व्यक्तिगतभावे पाठग्रहण सम्भव हयेछे। संस्कृत साहित्येर विपुल सञ्चार एखन आन्तर्याले। एर जन्ये दुरेर कोनो ग्रन्थागारेर प्रयोजन हय ना। दुष्प्राप्य पुस्तकओ देश विदेश थेके संग्रह करा यय अति सहजेइ। तथ्यपूर्ण अनेक अप्य (Application) पाओया यय। येमन - सिद्धान्तकौमुदी, गणकाष्ठाध्यायी, अमरकोष, धातुरूप माला, सुबन्तशिक्षा, संस्कृत स्वयं शिक्षा, संस्कृत अभिधान प्रभृति। विश्वेर किछु परिचित गबेष्णा मूलक प्रतिष्ठानेर निजस्व वेबसाइट आछे, येगुलो विभिन्न तथ्य ओ सफटओय्यार ए परिपूरक। प्रतिष्ठानगुलिर मध्ये उल्लेखयोग्य हलो - इन्दिरा गान्धी न्याशनल सेन्टार फर आर्टस - निउ दिल्ली, संस्कृत राष्ट्रीय संस्थान - निउ दिल्ली, सेन्टार इनस्टिटीउट अफ हाइयार तिवेतान स्टाडिज - सार्नाथ, विपाशा रिसार्च सेन्टार - महाराष्ट्र, भाषारकर ओरियेन्टल रिसार्च इनस्टिटीउट- पुने, मुक्कबोध सोसाइटी - बोम्बাই, एशियाटिक सोसाइटी - कोलकाता, संस्कृत साहित्य परिषद - कोलकाता, एछाड़ा देशेर ओ विदेशेर विभिन्न महाविद्यालय ओ विश्वविद्यालयेर निजस्व

ओवेबसाईट। आर्काईव् थके आमरा संग्रह करि आमादेर प्रयोजनीय तथ्य। विरल ताल्लिक ग्रन्थसमूह मुक्कबोध सोसाईटि'र ओवेबसाईटे पाओया याय। २११ टि पालि ग्रन्थ पाओया याय विपाशा रिसार्च इनस्टिटीउट ए। विदेशी गबेष्करा ए ब्यापारे सरासरीभावे एही सुबिधा भोग करे থাকेन। एमनकि नासा तेओ संस्कृत भाषार कौशल गबेष्णा लक्ष हछे। उपयुक्त शब्द प्रयोग करे निर्दिष्ट ओवेबसाईटे अन्वेषण करलेई उपयुक्त तथ्य पाओया याय। भारतेर चिरन्तन ँतिह्य तथा पुँथि संरक्षण करा हयेछे डिजिटल सिस्टेमे। एर फले साधारण मानुष वा बहू गबेष्क एही पुँथि देखते पडते पारेन इन्टारनेटे, कम्पिउटारेर सिडिते वा अन्यान्य प्रयुजिते।

## सिद्धान्त

मानुषेर ज्ञानेर परिधि येमन असीम, ज्ञानेर विषय तेमनई अनन्त। एकेई बला हय ' Universe of knowledge' एवं universe of subjects' । संस्कृत साहित्य सेई ज्ञानेर प्रकृत आधार। अतएव संस्कृत साहित्य प्रसङ्गे आन्तरजाल वा इन्टारनेट अत्यन्त परिपूरक। इन्टारनेटेर मतो एखानेओ विपुल संख्येक तथ्येर समावेश। प्राचीनकाले आर्यावर्तेर राजकार्य एही संस्कृत भाषातेई सम्पन्न हतो। संस्कृतेर साथे कम्पिउटार वा आन्तरजालेर निविड़ सम्पर्केर जन्य शिक्षक, गबेष्क, साधारण मानुष खुबई उपकृत ओ समृद्ध। आन्तरजालमय आधुनिक शिक्षा व्यवस्थाय संस्कृतेर परिसरके आरो उदात्त करा मानेई आमादेर ँतिह्यके, मूल्यबोधके बाँचिये राखा।

## ग्रन्थपञ्जि

चौधुरी, सत्यजिङ् एवङ् सरकार, बिजलि. (२००७). *हरप्रसाद शास्त्री रचना समग्रः*. कलकताः पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षङ् ।

बन्द्योपाध्याय, हरिचरण. (२००८). *वङ्गीय शब्दकोष (१म एवङ्२य खण्ड)*. कलकताः साहित्य एकादेमि ।

बन्द्योपाध्याय, धीरेन्द्रनाथ. (२०१०). *संस्कृत साहित्येर इतिहास*. कलकताः पश्चिमवङ्ग राज्य पुस्तक पर्षङ् ।

बन्द्योपाध्याय, उदयचन्द्र एवङ् अनीता. (२००८). *प्राचीन भारतेर संस्कृत साहित्य*. कलकताः संस्कृत बुक डिपो ।

भट्टाचार्य, बिमानचन्द्र. (२०१०). *संस्कृत साहित्येर रूपरेखा*. कलकताः बुक ओयार्ड ।

भट्टाचार्य, गुरुनाथ विद्यानिधि. (१८१९). *वङ्गद. अमरकोष*. कलकताः संस्कृत पुस्तक भाङ्गर ।

भट्टाचार्य, श्री परेशचन्द्र. (२००९). *भाषाविद्या परिचय*. कलकताः गिरी प्रिन्ट सर्भिस ।

शास्त्री, गौरीनाथ. (२०१२). *संस्कृत साहित्य सञ्चार*. कलकताः नवपत्र प्रकाशन ।

Aiyar, T. K. Ramachandra. (1989). *A Short History of Sanskrit Literature*. Palghat: R. S. Vadhyar & Sons.

Apte, Vamana Shiva Ram. (2010). *The Students Sanskrit English Dictionary*. New Delhi: MLBD.

Dasgupta, S. N. & De, S. K. (1977) . *A History of Sanskrit Literature*. Kolkata: University of Calcutta.

De, S. K. (1923). *History of Sanskrit Literature, Vol. I*. Calcutta: University of Calcutta.

Ganesh, Shatavadhani R. and Ravikumar, Hari. (2015). *Bodies of Knowledge in Hinduism*. India Facts.

Kale, M. R. (2011). *A Higher Sanskrit Grammar*. Delhi: MLBD.

Kejtu, Markandey. (2009). *Sanskrit as a language of Science*.

Winterniz, M. (1962). *A History of Indian Literature*. Trans. Mrs. 's. Ketkar. Vol, I PT. I. Calcutta: University of Calcutta.